ज्योतिर्गमय अंक १२ मई २०२१ वैशाख मास विक्रम संवत् २०७८
मानव भारती- विद्यालयस्य प्रयासः

आत्मानं विद्धि

ज्योतिर्गमय

कलिका त्रिवेदी
कक्षा ६ बी,
नालन्दा सदन

"वैदिक- ग्रन्थेषु जलम्"

जलमेव जीवनम् / जलस्य महत्त्वम्

इदमाप: प्रवहत् यत् किं च दुरितं मयि।
यद्वाहमभिदुद्रोह यद्वा शेष उतानश्तम्।।
(ऋग्वेद-१०/०२/०८)

अर्थात् हे जल देवता! मुझसे जो भी पाप हुआ हो उसे तुम दूर बहा दो अथवा मुझसे जो भी द्रोह हुआ हो, मेरे किसी कृत्य से किसी को भी पीड़ा हुई हो अथवा मैंने किसी को अपशब्द कहे हों, अथवा असत्य भाषण किया हो उन सब को तुम अपने निर्मल जल में बहाकर मुझे शुद्ध करो।

पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्व: प्रसव उत्पुनाम्यच्छद्रेण
पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभि:।। - (यजुर्वेद ०१/१२)

अर्थात् हे कुशद्वयरूप शोधक जल! तुम यज्ञ से सम्बद्ध बनो। मैं तुम्हें छिद्रहीन शोधक वायु से शुद्ध करता हूं तथा शुद्धि के हेतुभूत सूर्य-रश्मियों से भी शुद्ध करता हूं। हे परिशुद्ध जल! हमारी पवित्र कामनाओं की पूर्ति में तुम सहायक बनो।
तात्पर्य यह है कि जल के बिना किसी भी तरह की पूजा सम्पादित नहीं की जा सकती है। यही कारण है कि वेदों में अनेक स्थलों पर जल के महत्त्व, गरिमा, और महिमा का वर्णन किया गया है।

शन्नो देवी रभिष्टये आपो भवन्तु पीतये।
शं यो रभिस्रवन्तु न: ।। (यजुर्वेद ३६/१२)
अर्थात् हे दिव्य जल! तुम हमारा अभिष्ट करने वाले हो।हमारा कल्याण कर तुम हमारी तृषा शान्त करो।हमारे रोग एवम् अनिष्ट को दूर करो।कल्याणकारक,शान्तिकारक,तृषाहारक, रोगनिवारक हे जल!हम पर दयादृष्टि रखते हुए तुम हमारे लिए सदैव प्रवाहित होते रहो।

विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्य: शुचिरा पूतऽएमि।
दीक्षातपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवा शग्मां परिदधं भद्रं वर्णं
पुष्यन् ।। (यजुर्वेद ४/२)
अर्थात् परमात्मा ने सूर्य तथा अग्नि का सृजन इसलिए किया जिससे वे सभी पदार्थों में प्रवेश कर उनके रस एवं जल को तितर-बितर कर दें। जिससे वह जल पुन: वायुमंडल में जाकर और वर्षा के रूप में फिर धरती पर आकर सबको शुचिता और सुख प्रदान कर सके।

यजुर्वेद में जल को लौकिक पदार्थों का स्रोत तथा परिशुद्धिकारक कहा गया है।

अथर्ववेद में जल के विभिन्न स्रोतों तथा उनके उपकारक यंत्र आदि के प्रयोग में सम्बन्ध में निम्न प्रकार से उल्लिखित किया गया है -

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टय: संबभूवु:।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमि: पूर्व पेये
दधातु।। (अथर्ववेद १२/०३)
अथर्ववेद में जल द्वारा नाना प्रकार के रोगों का उपशमन किए जाने तथा जनहित में जल का उपयोग किए जाने के सम्बन्ध में कहा गया है-

अनभ्रय: खनमाना विप्रा गम्भीरे अम्भस:।
भिषग्भ्यो भिषक्तरा आपो अच्छा वदामसि।।
(अथर्ववेद १९/०३)
अर्थात् विद्वान् वैद्य अनेक प्रकार के रोगों में जल का उपयोग करें तथा जल में विद्यमान गुणों की व्याख्या कर समाज के हित में उसका पूर्णतया उपयोग करें।

यत्ते भूमि विखनामी क्षिप्रं तदापि रोहतु।
माते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्।।
(अथर्ववेद १२/०१/१३५)
जल इस धरा पर प्रकृति की देन है, जो हमें स्वत: ही प्राप्त होता है तथा सुख प्रदान करता है। अत: परमात्मा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए ऐसे जलों की रक्षा करनी चाहिए।
यजुर्वेद में जल को कल्याणकारी, माता के समान पुष्टिकारक तथा पूर्णता प्रदान करने वाला कहा गया है-
आपो हिष्टा मयो भुवस्ता न ऊर्जे दधातन।

महेरणाय चक्षसे।
यो व: शिवतमो रसस्तस्य भाजयते है न:।
उशतीरिव मातर:। तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय
जिन्वथ। आपो जनयथा च न: ।।
(यजुर्वेद ११/५०,५१,५२)
अर्थात् हे जल!आप कल्याणकारी हैं। हमारे बल की वृद्धि करते हुए पालन करें जिससे हम परमात्मा की प्राप्ति हेतु योग्य बन सकें।जिस प्रकार माता अपनी संतानों को पुष्ट करने के लिए उन्हें अपना दुग्धपान कराती हैं,उसी प्रकार आप भी हमारे पोषण के लिए अपने परम कल्याणमय रस का हमें भागी बनाओ। हे जल! जगत् के जिस रस के एक अंश से तुम समस्त विश्व को तृप्त करते हो उस रस की पूर्णता को हम सभी प्राप्त हों।

- डॉ.अनन्तमणि त्रिवेदी

जलमेव जीवनम्

मा आपो हिंसी - यजुर्वेद ६/१२
जल को प्रदूषित नहीं करना चाहिए।

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्न संभव:।
यज्ञाद्भवन्ति पर्जन्यो यज्ञ: कर्म समुद्भव:।।
- श्रीमद्भगवद्गीता ३/१४

सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं।अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है। वृष्टि यज्ञ से होती है और यज्ञ विहित कर्मों से उत्पन्न होने वाला है।

१.जलमेव जीवनम् अस्ति।
२अस्माकं जीवने जलस्य आवश्यकता वर्तते।
३ पृथिव्या: जीवानां कृते जलम् आवश्यकं तत्त्वम् अस्ति।
४.नदीनां जलं पवित्रम् आरोग्यवर्धकं च भवति।
५.जीवा अपि इदं जलम् पीत्वा जीवन्ति।
६.जलेन क्षेत्राणां सिंचनं भवति।
७.जलसंरक्षाणार्थं वर्षाजलस्य संग्रह: अतिआवश्यक: भवति।
८.जलसंरक्षणाय जलस्य मुख्यं स्रोत: नदी-तडाग-सरोवरस्य च स्वच्छता अनिवार्यता अस्ति।
९.जलं विना अस्माकं जीवनम् असम्भवम् अस्ति।
१०.जलमेव जीवनस्य मुख्य: आधार: अस्ति।
११.अस्माकं संकल्प: जलसंरक्षणम्।

-सार्थक शर्मा ६अ (विक्रमशिला सदन)

जलचक्रम्

जलं विना न किमपि साध्यम्।
पृथिव्यां संपूर्णं जलसंसाधनं अपरिवर्ती भवति। जलं सागरेषु, वायुमंडले, पृथिव्यां च भ्रमति।
तत् जलचक्रं कथ्यते।
सागरस्य जलं सूर्यस्य तापेन वाष्परूपं भवति। अथ शीतले मेघस्वरूपं भवति। वर्षारूपं धरति।
वर्षामाध्यमेन पृथिव्यां नदी: तडागा: च आगच्छति। वयं तस्मिन् जलं प्राप्यन्ति।
जलस्य उपयोग: क्रियते। पुन: जलं नदीयां गच्छति।
नदी: सागरे मिलन्ति।
सागरस्य जलं वाष्पं भवति। इदं चक्रं सततं भवति।
परं जलस्य वितरणं पृथिव्यां समानं न अस्ति।
केषु: क्षेत्रेषु जलं न्यूनमात्रायां प्राप्यते।
जलं संरक्षम् आवश्यकम् अस्ति।

जलमहत्त्वं सुक्तम्

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्था न ऊर्जे दधातन ।
महे रणाय चक्षसे ॥१॥
यो व: शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह न: ।
उशतीरिव मातर: ॥२॥
तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ ।
आपो जनयथा च न: ॥३॥

प्रो.राम गुप्ता, एमैरिटस प्राध्यापक,बेरिंगटन रोढ आयलैंड, अमेरिका (जलविशेषज्ञ)

जलं विना जीवनम् अपूर्णम्-

संरक्ष्यार्थं च भूतानां सृष्ट प्रथमतो जलम्।
यत् प्राणा: सर्वभूतानां वर्द्धन्ते येन च प्रजा:।।

जीवों की सुरक्षा के लिए उस परम तत्त्व ने सर्वप्रथम जल की सृष्टि की, क्योंकि जल ही सभी प्राणियों का जीवन है।
जल बिना जीवन अधूरा है। हम सब यह अच्छी तरह जानते हैं कि जल की हमारे जीवन में कीतनी महत्ता है। या यह कहें कि जल बिन जीवन अधूरा है ।अर्थात जल ही जीवन है। आपको यह भी अच्छी तरह ज्ञात होगा कि पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जहाँ जल के कारण ही जीवन सम्भव है। हमारे दैनिक जीवन में जल का अपना ही महत्त्व है ।
जैसे:-पीने के लिए जल, नहाने के लिए जल,कपड़े धोने के लिए जल,खाना बनाने के लिए जल,बर्तन धोने के लिए जल,एवम् अन्य कार्यो के लिए भी जल की आवश्यकता पड़ती है।जल मनुष्य के अलावा अन्य जीवों की भी आवश्यकता है ।चाहे वह जानवर हो या पशु- पक्षि। इनका भी जल के बिना जीवन सम्भव नहीं है।हमारी पृथ्वी पर जल हमें अनेको स्रोतों से प्राप्त होता है ।जैसे:-नदी, तालाब, कुँआ, झील, झरने, समुद्र इत्यादि।
जल की उपयोगिता को देखते हुए हमें इन सभी जगहों को साफ व स्वच्छ रखने में योगदान देना चाहिए। जल की एक एक बूंद अनमोल होती है। हमें इसका भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि जल हमारे पर्यावरण का संतुलन बनाये रखने में हमारी मदद करता है।जिससे वर्षा होती है और पुनः जल तालाबों, नदियों, झीलों, में पहुंच जाता है। जल के कारण ही अन्न, सब्जियां, एवं फल पैदा होते हैं और हम तक पहुंच कर हमें जीवित रखने में हमारी मदद करते हैं।आज समय की स्थिति को देखते हुए साफ जल की हमारी पृथ्वी पर कमी होती जा रही है क्योंकि हम सब मिलकर तालाबों, नदियों, झरनों इत्यादि को दूषित करते जा रहे हैं और हमारी पृथ्वी पर साफ जल का संकट मंडरा रहा है। अगर ऐसे ही चलता रहा तो न जल रहेगा और न ही जीवन।
तो आज हम सभी को एक संकल्प लेने की जरूरत है कि हम जल का उपयोग जरूरत के अनुसार ही करेंगे। कपड़े धोते समय, बर्तन मांजते समय, नहाते समय जल का इस्तेमाल कम से कम मात्रा में करेंगे, क्योंकि जल है तो कल है नहीं तो सब विफल है।

- अवन्तिका भण्डारी 8ब (तक्षशिला सदन)

समीक्षा गहरवार कक्षा 9 नालन्दा सदन

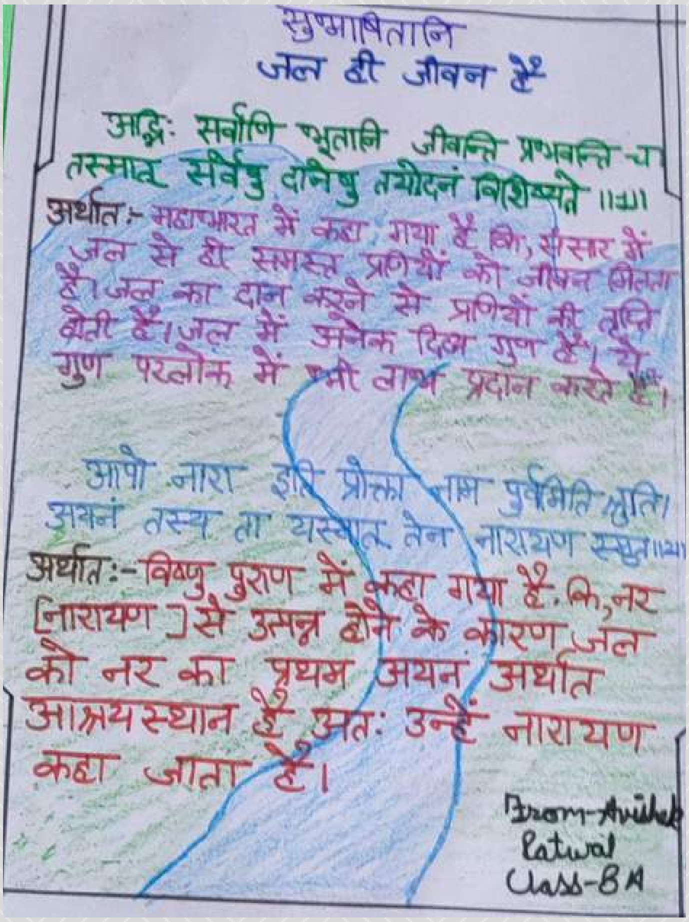

अविषेक पटवाल 8अ विक्रमशिला सदन

"जलमेव जीवनम्"

इस गर्मी में पशु पक्षियों की प्यास बुझाने के लिए लोगों को प्रयास करना चाहिए -

गर्मियों में कई परिंदों व पशुओं की मौत पानी की कमी के कारण हो जाती है। लोगों का थोड़ा सा प्रयास घरों के आस पास उड़ने वाले परिंदों की प्यास बुझाकर उनकी जिंदगी बचा सकता है। सुबह आंखें खुलने के साथ ही घरों के आस-पास गौरेया, मैना व अन्य पक्षियों की चहक सभी के मन को मोह लेती है। घरों के बाहर फुदकती गौरेया बच्चों सहित बड़ों को भी अपनी ओर आकर्षित करती है। गर्मियों में घरों के आसपास इनकी चहचहाहट बनी रहे, इसके लिए जरूरी है कि लोग पक्षियों से प्रेम करें और उनका विशेष ख्याल रखें।

जिले में गर्मी बढने लगी है। यहां का तापमान 30 डिग्री सेल्सियस पार हो गया है। आने वाले सप्ताह और जेठ में और अधिक गर्मी पडने की संभावना है। गर्मी में मनुष्य के साथ-साथ सभी प्राणियों को पानी की आवश्यकता होती है। मनुष्य तो पानी का संग्रहण कर रख लेता है, लेकिन परिंदे व पशुओं को तपती गर्मी में यहां-वहां पानी के लिए भटकना पड़ता है। पानी न मिले तो पक्षी बेहोश होकर गिर पड़ते हैं।

अपने घर की बालकनी और आंगन में आप पक्षियों के लिए पानी रख सकते हैं। ध्यान रहे कि प्लास्टिक या स्टील के बर्तन में पानी न रखें। धूप में इन बर्तनों का पानी बहुत गर्म हो जाता है। मिट्टी के बर्तन में पानी रखना सबसे अच्छा होता है। इन बर्तनों की नियमित सफ़ाई करते रहें, ताकि पक्षी रोगों से दूर रहें..

- प्रांजल गुप्ता, कक्षा - नवीं तक्षशिला सदन

ये जो जल है तो ही कल है - जल के बिना सब बेकार है

जिस प्रकार हमारे जीवन में प्रतिदिन भोजन व हवा का महत्व है उसी प्रकार जल भी हमारे लिए महत्वपूर्ण है। हम कुछ दिन बिना भोजन के तो जीवित रह
सकते हैं लेकिन जल के बिना हम एक दिन भी नहीं रह सकते। बिना पानी पिये हमारा दिन नहीं कट सकता। जल जिसे हम साधारण घरेलू भाषा
में पानी के नाम से जानते हैं, उसका उपयोग करना सुबह उठने से लेकर रात्रि सोने तक हम एक पल के लिए भी भूल नहीं सकते। सुबह उठते ही मुंह धोने,
नहाने, खाना बनाने, पानी पीने, नाश्ते, दोपहर भोजन, रात्रि भोजन समेत कई कार्यों में हम पानी का उपयोग करते हैं।

हमें पानी का उपयोग उतना ही करना चाहिए जितनी हमें आवश्यकता हो। फालतू में पानी को बर्बाद नहीं करना चाहिए। हमेशा पानी को बचाकर रखना चाहिए।पीने का पानी बहुत ही कम मात्रा में होता है इसलिए हमें पानी के महत्व को समझना चाहिए। हमें बरसात के पानी को भी टंकी में बचाकर रखना चाहिए जिसे हम उबाल कर पीने के लिए तथा कपड़े धोने व बर्तन धोने समेत कई कामों में उपयोग में ला सकते हैं। इसके अलावा हम घर के बाहर या छत में पक्षियों के
लिए भी जल पीने के लिए रख सकते हैं और घरों के बाहर फूलों व पौधों में इस जल का उपयोग कर हम पीने के पानी को बचाकर रख सकते हैं जिससे हम पानी की कमी को पूरा कर सकते हैं।

- विदिशा सहदेव-६बी नालन्दा सदन

पानी बचाओ

साहिल चौहान 6बी विक्रमशिला सदन

जलसूक्तयः - जल की सूक्तियां :-

१.जलं विना न जीवनम्।
२.स्वच्छं रक्ष जलं जलपात्रम्।
३.जलं व्यर्थं मा कुरु।
४.रहिमन पानी राखिए,बिन पानी सब सून।
पानी गए ना ऊबरे, मोती मानुष चून।।
५.वर्षाजलस्य संरक्षणम् आवश्यकम्।
६.जलमेव जीवनम्।
७.मा आपो हिंसी-जल को प्रदूषित नहीं करना चाहिए।- यजुर्वेद ६/१२
८ दिव्या वृष्टि अस्माकं सुपारा-वर्षा से प्राप्त जल उत्तम होता है, क्योंकि वह दिव्य और शुद्ध होता है।--ऋग्वेद १/१५२/७
९.जल है तो कल है।
१०.जल जीवन का अनमोल रतन इसे बचाने का करो जतन।
११.जल संरक्षण जरूरत भी और कर्तव्य भी।
१२.पानी बचाओ, पानी बचाओ, पानी है अनमोल,न बहाने दो पानी को जानो इसका मोल।
१३.जल से जीवन,जीवन ही जल,समझे जब तभी बचे जल। जन--जन हमें जगाना होगा जल सब तरह बचाना होगा।
१४.जल संरक्षण,जीवन संरक्षण।
१५.पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्- पृथ्वी पर तीन ही रत्न हैं-जल,अन्न और सुभाषित। हमें इनकी रक्षा करनी चाहिए।

संकलितम्- वंश बहुगुणा कक्षा-६ बी (तक्षशिला सदन)

चित्रकला

अंशिका मिश्रा कक्षा 5
नालन्दा सदन

मम पुस्तकालये पुस्तकम् अस्ति-

श्रीमद्भगवद्गीता

मानव भारती-विद्यालयस्य पुस्तकालये यद्यपि अनेकानि पुस्तकानि सन्ति तथापि संस्कृत-पुस्तकानां बाहुल्यमपि अत्र वर्तते।अत्र श्रीमद्भगवद्गीता पुस्तकालयस्य शोभां वर्धयति।
श्रीमद्भगवद्गीताया: उपदेष्टा श्रीकृष्ण: अस्ति। भगवत: श्रीकृष्णस्य उपदेश: गीता कथ्यते। अत्र सप्तशतं श्लोका: अष्टादश अध्यायाश्च विद्यन्ते । श्रीमद्भगवद्गीतायां कर्मयोग:, भक्तियोग:,सांख्ययोग: ज्ञानयोग:, नीतिशास्त्रं, दर्शनशास्त्रं, धर्मशास्त्रं च निरूपितम् अस्ति।अस्या: लघु: आकार: अस्ति किंतु अस्यां प्रतिपादित:विषय: विस्तृत: अस्ति। अस्माभि: सर्वै: अवश्यमेव गीता गेया, पठितव्या च।

गीता अस्माकं अतीव प्रियं पुस्तकम् अस्ति।
धर्मार्थ काममोक्षाणामुपलब्धिर्भवेद्यया।
श्रीमद्भगवद्गीता सा सर्वकल्याणकारिणी।।
सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दन:।
पार्थो वत्स: सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।।

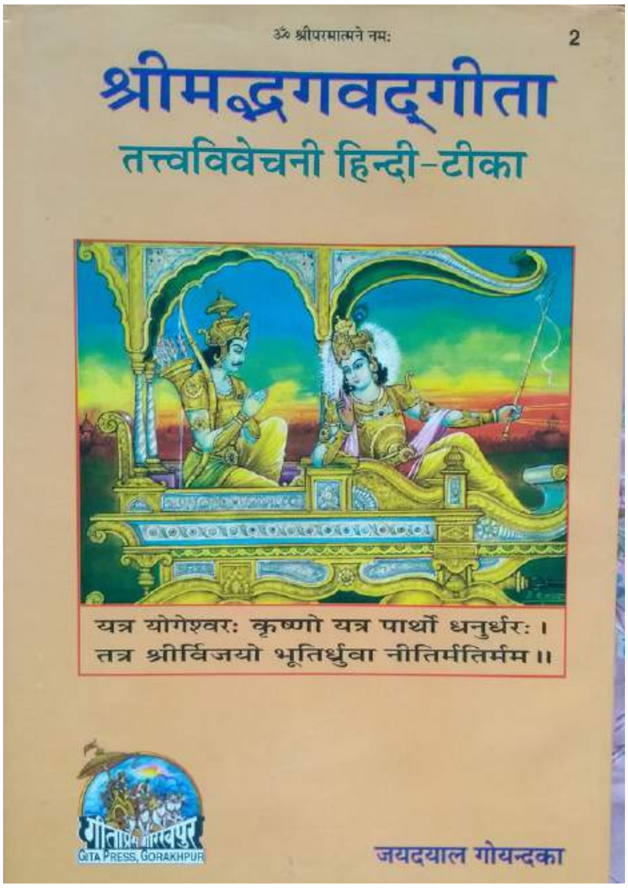

मातृदिवसः (मदर्स-डे)

मातृदिवस: (मदर्स-डे) मई-मासस्य द्वितीये रविवासरे भवति।मानव भारती देहरादून विद्यालयस्य छात्रा: अस्मिन् दिवसे मातृवन्दनम् अभिनंदनं च कृतवन्त:। प्रात: कालादेव विद्यार्थिन: मात्रा सह नृत्यं,कवितापाठं,संवादं,चित्रनिर्माणं विविध- क्रियाकलापं च अकुर्वन्। वेदांत सिंह कुशवाहा कक्षा-६ए, कलिका त्रिवेदी कक्षा ६बी अन्ये च अनेके छात्रा:स्व विचारान् क्रियाकलापं च प्रदर्शितवन्त:। वस्तुत: माता गुरुतरा भूमे:। न मातु: पर दैवतम्। मातृदेवो भव। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। इत्यादि शास्त्रवचनै: मातु: महत्त्वं सर्वे अवगच्छन्ति।अस्माभि:सर्वै:मातृमहत्त्वम् अवश्यमेव अवगन्तव्यम्। मात्रे नम:।

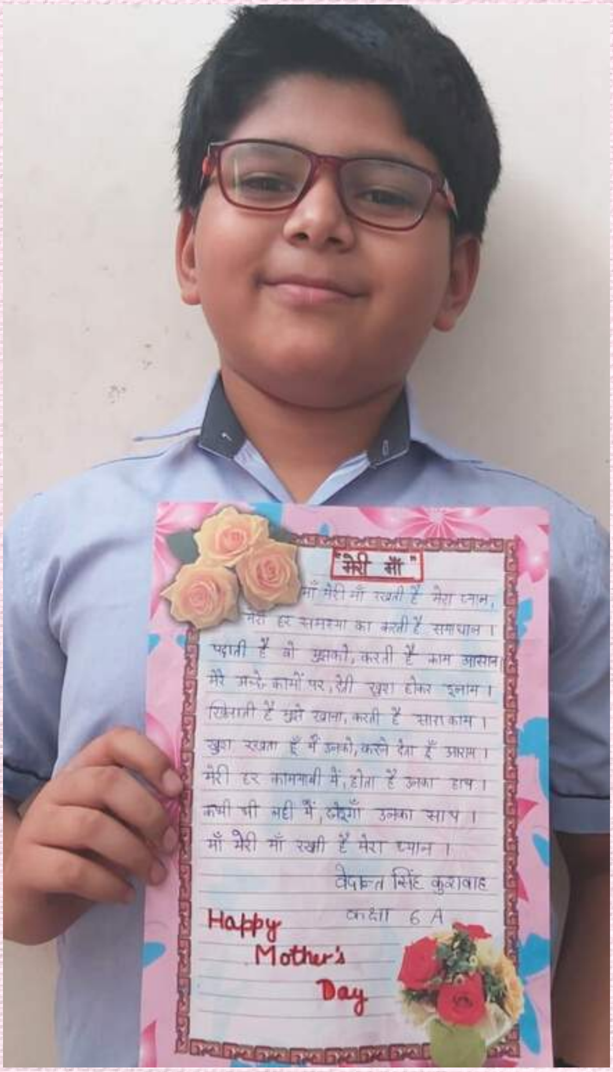

वेदांत सिंह कुशवाहा 6ए, नालन्दा सदन

कलिका त्रिवेदी 6बी, नालन्दा सदन

पठतु संस्कृतं वदतु संस्कृतम्-संस्कृत पुं.शब्द अभ्यास

छात्रः

मण्डुकः

दन्तकूर्चः

गवाक्षः

शिक्षकः

सिंहः

चषकः

भल्लुकः

सौचिकः

कृषकः

अश्वः

मयूरः

बालकः

गजः

शुनकः

वृद्धः

चालकः

बलीवर्दः

स्यूतः

Manava Bharati India International School
D- Block, Nehru Colony, Dehradun 248001 Uttarakhand
E-mail.com:- hr@mbs.ac.in, Website:- www.mbs.ac.in
Phone- 0135-2669306, 8171465265, 7351351098 (Dr. Anantmani Trivedi)

आत्मानं विद्धि

मानव भारती स्कूल देहरादून के लिए प्रसारित। केवल निजी प्रसार के लिए।
संपादक - डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी , डिजाइन- विशाल लोधा